साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Email- thekaarmiicpost@gmail.com

वर्ष : 11, अंक : 19 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 10 दिसंबर 2025 से 16 दिसंबर 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

Global School Of Excellence, Obedullaganj

जलवायु इतिहास का दूसरा सबसे गर्म साल बनने की राह पर 2025, दर्ज हुआ तीसरा सबसे गर्म नवंबर

मुंबई। दुनिया में बढ़ता तापमान अब महज आंकड़े नहीं रह गया, यह ऐसी कड़वी सच्चाई बन चुका है, जिसे झुठलाना नामुमकिन है। इसका एक और सबूत कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सीथएस) द्वारा साझा आंकड़ों में सामने आया है।

आंकड़ों के मुताबिक 2025 जलवायु इतिहास के दूसरे सबसे गर्म वर्षों होने की राह पर है, जो 2023 के साथ अब तक का दूसरा सबसे गर्म वर्ष हो सकता है। इस बारे में कॉपरनिकस द्वारा जारी मासिक जलवायु रिपोर्ट के मुताबिक नवंबर 2025 जलवायु इतिहास का तीसरा सबसे गर्म नवंबर रहा। इस महीने सतह का वैश्विक औसत तापमान 14.02 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 1.54 डिग्री सेल्सियस अधिक है। मतलब कि वैश्विक स्तर पर बढ़ता तापमान एक बार फिर डेढ़ डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर गया है। यह वही सीमा है जिसको लेकर वैज्ञानिक दशकों से आगाह करते आए हैं। वहीं यदि 1991 से 2020 में नवंबर के औसत तापमान से तुलना करें तो इस साल नवंबर का महीना 0.65 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म रहा। इस दौरान उत्तरी कनाडा, आर्कटिक महासागर और अंटार्कटिका के कई हिस्सों में तापमान सामान्य से काफी ऊपर रहा। वहीं उत्तरी साइबेरिया असामान्य रूप से ठंडा रहा। रिपोर्ट से पता चला है कि नवंबर 2025 के दौरान दुनिया भर में चरम मौसमी घटनाएं तेजी से बढ़ीं। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में आए उष्णकटिबंधीय चक्रवातों और भारी बारिश ने 1,100 से अधिक लोगों की जिंदगियां निगल ली। ग्रीस, अल्बानिया, ब्रिटेन और आयरलैंड जैसे देशों में भारी वर्षा और तूफानों ने सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त कर दिया। दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका, उत्तरी कनाडा के कुछ हिस्से, उत्तर-पश्चिमी रूस, ताइवान, दक्षिणी अफ्रीका, मेडागास्कर और ऑस्ट्रेलिया के तटीय इलाकों में भी औसत से अधिक बारिश दर्ज की गई। दूसरी ओर, दक्षिणी यूरोप, तुर्की और पश्चिमी एशिया के कई हिस्से गंभीर सूखे से जूझते रहे। इसी तरह उत्तरी मैक्सिको, दक्षिण-पूर्वी अमेरिका, पश्चिम और मध्य एशिया के बड़े हिस्से और दक्षिणी ब्राजील में औसत से कम बारिश रिकॉर्ड की गई। जनवरी से नवंबर 2025 के बीच सतह का वैश्विक औसत तापमान औद्योगिक काल (1850 से 1900) की तुलना में 1.48 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्म रहा। ये उतनी ही बढ़ोतरी है जो 2023 में दर्ज की गई थी, जिसे अब तक का दूसरा सबसे गर्म वर्ष माना जाता है। वहीं 1991 से 2020 की तुलना में देखें तो यह तापमान 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। गौरतलब है कि 2024 जलवायु इतिहास के सबसे गर्म वर्ष के रुप में दर्ज है। रिपोर्ट के मुताबिक भले ही 2025 का औसत तापमान औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 1.5 डिग्री सेल्सियस के ऊपर न जाए, लेकिन आंकड़ों के मुताबिक यह पहली बार होगा जब तीन वर्षों का औसत तापमान इस सीमा के पार जाएगा। यूरोप में नवंबर का औसत तापमान सामान्य से 1.38 डिग्री सेल्सियस ऊपर रहा, जो इसे पांचवां सबसे गर्म नवंबर बनाता है। पूर्वी यूरोप, बाल्कन, रूस और तुर्की में गर्म हवाएं चलीं, जबकि स्वीडन, फिनलैंड और उत्तरी इटली में ठंड अधिक महसूस की गई। सितंबर से नवंबर के दौरान भी दुनिया भर में तापमान सामान्य से कई गुना अधिक रहा। इस दौरान वैश्विक औसत तापमान 1991 से 2020 के औसत कि तुलना में 0.67 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। यह अब तक की तीसरी सबसे गर्म सितंबर से नवंबर की अवधि है। इस दौरान दुनिया के अधिकांश हिस्सों में तापमान सामान्य से अधिक रहा, खासकर उत्तरी कनाडा, आर्कटिक और अंटार्कटिका में। दक्षिण एशिया में तापमान का पैटर्न मिला-जुला रहा, जबकि उत्तर-पूर्वी रूस में कहीं ज्यादा ठंड महसूस की गई। रिपोर्ट में यह भी सामने आया है कि धरती के साथ-साथ समुद्र भी तेजी से गर्म हो रहे हैं। ऐसा ही कुछ नवंबर 2025 में भी देखने को मिला। इस दौरान समुद्र की की सतह का औसत तापमान 20.42 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो नवंबर के लिए अब तक चौथा सबसे ऊंचा स्तर है। हालांकि यह नवंबर 2023 के रिकॉर्ड स्तर से 0.29 डिग्री सेल्सियस कम है। इसी तरह उत्तर प्रशांत और नॉर्वेजियन सागर में समुद्र का तापमान रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच गया, जबकि मध्य और पूर्वी प्रशांत में ला नीना की वजह से कुछ ठंडक दिखाई दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में खजुराहो में हुई निवेश संवर्धन पर मंत्रि-परिषद समिति की बैठक

5 औद्योगिक इकाइयों को मिली मंजूरी आर्थिक संपन्नता की ओर मध्यप्रदेश, होगा निवेश-बढ़ेंगे रोजगार

भोपाल राज्य में निवेश संवर्धन और रोजगार सृजन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बढ़ाते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खजुराहो में 9 दिसंबर को निवेश संवर्धन पर मंत्रि-परिषद समिति (छ्ष्ठ्ठक्क) की अहम बैठक ली। बैठक में 5 औद्योगिक इकाइयों के निवेश प्रकरणों को मंजूरी दी गई। साथ ही प्रदेश के जिलों में प्रस्तावित औद्योगिक परियोजनाओं को दी जाने वाली वित्तीय सुविधाओं के संबंध में अहम निर्णय लिए गए। बैठक में उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा, एमएसएमई मंत्री श्री चैतन्य काश्यप, कौशल विकास एवं रोजगार राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री गौतम टेटवाल, संस्कृति-पर्यटन-धार्मिक न्यास और धर्मस्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन सहित प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे।

मंत्रि-परिषद समिति की बैठक में जे.के. सीमेंट कंपनी के निवेश प्रकरण पर चर्चा हुई। कंपनी वर्तमान में पन्ना जिले में 2600 करोड़ रुपये के इंटीग्रेटेड क्लिंकर और सीमेंट प्रोडक्शन प्रोजेक्ट पर काम कर रही है और 6 हजार से अधिक लोगों को रोजगार भी दे रही है। जे.के. सीमेंट भविष्य में 1850 करोड़ रूपये से अधिक के अतिरिक्त निवेश से यूनिट का विस्तार कर रही है, जिससे 800 लोगों को रोजगार मिलेगा। बैठक में अल्केम लैबोरेट्रीज कंपनी का निवेश प्रकरण भी रखा गया। यह कंपनी फार्मा क्षेत्र में फार्मूलेशन-एपीआई और बल्क ड्रग प्रोडक्शन कर रही है। इस कंपनी ने मुंबई में हुए रोड-शो के दौरान 500 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश की इच्छा जताई थी। कंपनी ने उज्जैन के विक्रम उद्योगपुरी में टैबलेट, कैप्सूल, ड्राई सिरप और ड्राई पाऊडर इंजेक्शन के निर्माण के लिए यूनिट की स्थापना का प्रस्ताव दिया है। इससे 500 लोगों को रोजगार मिलेगा। राज्य में डिजिटल अवसंरचना, क्लाउड सेवाओं तथा डेटा-आधारित उद्योगों को बढ़ावा देने की दिशा में मेसर्स कंट्रोल एस डेटा सेंटर लिमिटेड द्वारा बड़वई आईटी पार्क, भोपाल में लगभग 500.20 करोड़ रूपये के निवेश से डेटा सेंटर सुविधा विकसित की जा रही है।

सिमटा ओजोन छिद्र

2025 में अंटार्कटिका के ऊपर बना ओजोन छिद्र एक दिसंबर को बंद हो गया, जो 2019 के बाद सबसे जल्द बंद होने का रिकॉर्ड है। यह लगातार दूसरा साल है जब ओजोन छिद्र आकार में छोटा रहा और इसकी गहराई भी पहले की तुलना में कम रही। अच्छी खबर यह है कि 2020 से 2023 तक जो बड़े और लंबे समय तक बने रहने वाले ओजोन छिद्र देखे गए थे, उनकी तुलना में इस बार ओजोन परत में ज्यादा ओजोन मौजूद थी। यह संकेत देता है कि ओजोन परत धीरे-धीरे सुधार की राह में आगे बढ़ रही है। अंटार्कटिका के ऊपर साल दर साल ओजोन छिद्र अगस्त से दिसंबर के बीच बनता है। इस साल इसने अगस्त के मध्य से बनना शुरू किया, जो सामान्य है। सितंबर की शुरुआत तक इसका आकार बढ़कर 2.1 करोड़ वर्ग किलोमीटर तक पहुंच गया। देखा जाए तो यह आकार में विशाल जरूर है, लेकिन 2023 में बने 2.61 करोड़ वर्ग किलोमीटर के विशाल छिद्र कि तुलना में बेहद छोटा है।

इसके साथ ही सितंबर में ओजोन छिद्र का आकार सिमटना शुरू हो गया, लेकिन पूरा महीना यह डेढ़ से दो करोड़ वर्ग किलोमीटर के बड़े दायरे में बना रहा, जो करीब-करीब अंटार्कटिका के क्षेत्रफल जितना है। अक्टूबर के अंत तक भी यह इसी आकार में बना रहा। लेकिन नवंबर में यह अचानक तेजी से सिमटना शुरू हुआ, जिससे उम्मीद बनी कि यह बहुत जल्द बंद हो सकता है। आखिरकार एक दिसंबर को यह बंद हो गया, जो चार दशकों में सबसे जल्द बंद होने की घटनाओं में से एक है। कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस द्वारा इस बारे में साझा जानकारी के मुताबिक हाल के वर्षों की तुलना 2025 के ओजोन छिद्र में कुछ असमान्य बातें सामने आईं। उदाहरण के लिए इस ओजोन परत का न्यूनतम स्तर पिछले वर्षों से बेहतर था। इसी तरह ओजोन की कमी (ओजोन मास डेफिसिट) भी सामान्य से कम रही। इन दोनों वजहों से इस साल ओजोन छिद्र कम गहरा और कम नुकसानदेह था। इस दौरान वायुमंडल की ऊपरी परत यानी स्ट्रैटोस्फियर में हवाएं कमजोर रहीं, जिससे बाहरी इलाकों से ओजोन से भरपूर हवा अंदर आने लगी। इन सभी कारणों ने ओजोन परत को नुकसान कम पहुंचने दिया और गिरावट धीमी हुई। कॉपरनिकस द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक 2024 में भी ओजोन छिद्र अपेक्षाकृत छोटा रहा। यह सामान्य से देर से विकसित हुआ और औसत समय के भीतर बंद भी हो गया। लगातार चार वर्षों तक 2020 से 2023 के बीच बेहद बड़े और लंबे समय तक टिकने वाले ओजोन छिद्र देखने के बाद 2024 का यह छोटा और कम अवधि वाला छिद्र वैज्ञानिकों के लिए उम्मीद की किरण बना, मानो ओजोन परत धीरे-धीरे सुधार की ओर बढ़ रही हो। विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने भी सितम्बर 2025 में जारी ओजोन बुलेटिन 2024 में कहा था कि पिछले साल ओजोन परत को होने वाला नुकसान कम रहा। रिपोर्ट के मुताबिक साल 2024 में अंटार्कटिका के ऊपर बनने वाला ओजोन छिद्र हाल के वर्षों की तुलना में छोटा रहा। इसके उलट, 2020, 2021, 2022 और 2023 के ओजोन छिद्र असाधारण रूप से बड़े और लंबे समय तक बने रहे।

पहाड़ों में तेजी से बदल रही है जलवायु, प्रजातियों की विलुप्ति व अरबों लोगों की पानी की आपूर्ति दांव पर

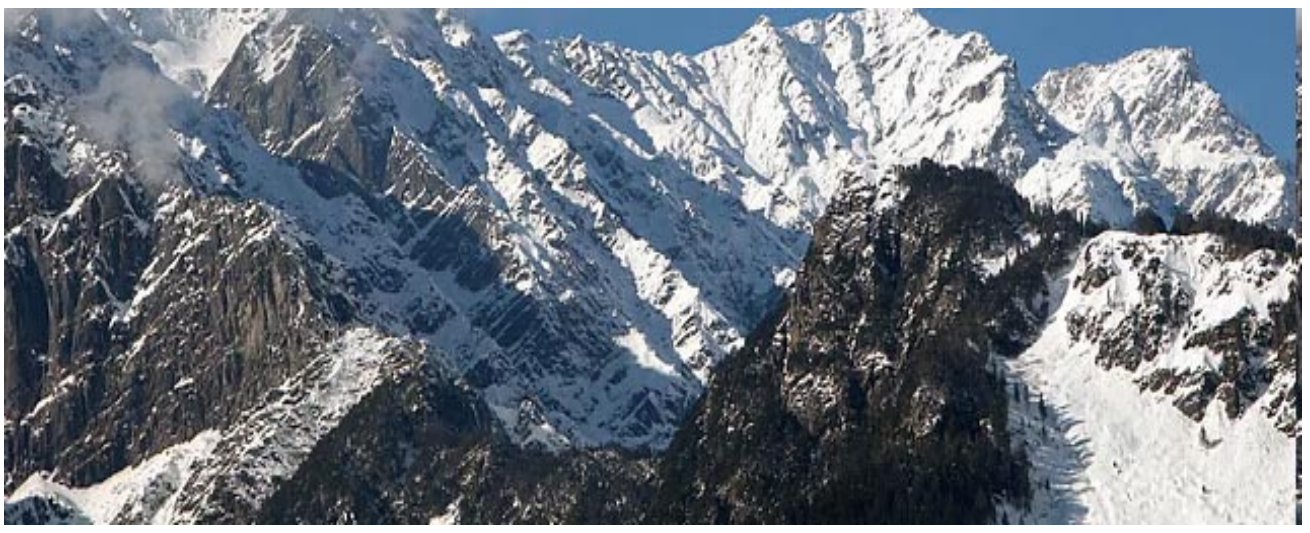

नई दिल्ली। दुनिया के पर्वतीय क्षेत्र आज जलवायु परिवर्तन की तीव्र चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हाल ही में नेचर रिव्यूज अर्थ एंड एनवायरनमेंट में प्रकाशित एक वैश्विक अध्ययन में यह पता चला है कि पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरणीय बदलाव निचले इलाकों की तुलना में कहीं अधिक तेजी से हो रहे हैं। वैज्ञानिक इस घटना को ऊंचाई-निर्भर जलवायु परिवर्तन (एलिवेशन-डिपेंडेंट क्लाइमेट चेंज, ईडीसीसी) कहते हैं। यह अध्ययन दुनिया भर के पर्वतों के तापमान, बारिश और हिमपात के पैटर्न में होने वाले बदलाव का सबसे व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन की अगुवाई यूनिवर्सिटी ऑफ पोर्ट्समाउथ के शोधकर्ताओं ने किया। शोध में विभिन्न आंकड़ों के स्रोतों और विशेष पर्वतीय क्षेत्रों जैसे रॉकी माउंटेन, आल्प्स, एंडीज और तिब्बती पठार के मामलों के अध्ययन का विश्लेषण किया। बारिश और हिमपात में बदलाव- बर्फबारी कम और बारिश अधिक हो रही है, जिससे बाढ़ और मौसमीय अस्थिरता बढ़ रही है। 1980 से 2020 तक के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर कुछ चिंताजनक रुझान सामने आए हैं- तापमान में वृद्धि- पर्वतीय क्षेत्रों का तापमान औसतन आसपास के निचले क्षेत्रों से 0.21 डिग्री सेल्सियस प्रति दशक अधिक बढ़ रहा है। बारिश और बर्फबारी में बदलाव- पहाड़ों में बारिश की अनियमितता बढ़ रही है पर्वतीय और आर्कटिक क्षेत्रों में समानताएं- अध्ययन के अनुसार, पर्वत और आर्कटिक दोनों ही क्षेत्रों में बर्फ के तेजी से पिघलने की प्रक्रिया चल रही है। यही कारण है कि इन क्षेत्रों के पारिस्थितिकी तंत्र में गंभीर बदलाव देखे जा रहे हैं। पर्वतीय जलवायु परिवर्तन केवल पर्वतीय समुदायों तक ही सीमित नहीं है। एक अरब से अधिक लोग दुनिया भर में पर्वतीय बर्फ और ग्लेशियर से मिलने वाले पानी पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए, हिमालय से बहने वाले जल स्रोत चीन और भारत जैसे बड़े देशों की आबादी के लिए अहम हैं। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि हिमालय की बर्फ पहले की तुलना में अधिक तेजी से घट रही है। जब बर्फबारी बारिश में बदलती है, तो बाढ़ का खतरा बढ़ जाता है। इससे प्राकृतिक आपदाएं और भी गंभीर हो सकती हैं। सिर्फ मानव ही प्रभावित नहीं हो रहे। तापमान बढ़ने के साथ ही पेड़-पौधे और जानवर ठंडी जलवायु की तलाश में ऊंचाई की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन कुछ मामलों में वे पर्वत की चोटी तक पहुंचकर रुक जाते हैं। इससे प्रजातियां विलुप्त होने और पारिस्थितिकी तंत्र में स्थायी परिवर्तन का खतरा बढ़ जाता है। हाल के उदाहरण में पाकिस्तान का यह साल शामिल है, जब अत्यधिक मानसूनी बारिश और बादल फटने (क्लाउडबर्स्ट) के कारण 1,000 से अधिक लोगों की मौत हुई। यह पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन की गंभीरता को दर्शाता है। बारिश और हिमपात में बदलाव- बर्फबारी कम और बारिश अधिक हो रही है, जिससे बाढ़ और मौसमीय अस्थिरता बढ़ रही है। यह अध्ययन टीम के 2015 के शोध का विस्तार है, जिसमें पहली बार यह साबित हुआ था कि पर्वत भारी ऊंचाई पर तेजी से गर्म हो रहे हैं। उस समय प्रमुख कारणों के रूप में बर्फ और ग्लेशयरों का क्षरण, वायुमंडलीय नमी में वृद्धि और एयरोसोल प्रदूषण पहचाने गए थे। अब, दस साल बाद वैज्ञानिकों ने यह समझा है कि परिवर्तन के नियंत्रण और प्रभाव को बेहतर तरीके से समझा जा सकता है, लेकिन मूल समस्या वैसी की वैसी बनी हुई है। एक बड़ी चुनौती पर्वतीय क्षेत्रों में मौसम का आंकड़ा हासिल करना है। शोध के अनुसार, पर्वत कठिन, दूरस्थ और पहुंचने में मुश्किल जगह हैं। इसलिए वहां मौसम और जलवायु स्टेशन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण है। आंकड़ों की कमी के कारण वैज्ञानिकों को वास्तविक तापमान और बर्फ की कमी का अनुमान कम हो सकता है। साथ ही, कंप्यूटर मॉडल्स को भी उच्च सटीकता वाली तकनीक की आवश्यकता है। अधिकांश वर्तमान मॉडल केवल कुछ किलोमीटर की दूरी पर बदलाव को ट्रैक कर पाते हैं, जबकि पर्वत में ढलानों के बीच जलवायु में मामूली दूरी पर भी भारी अंतर हो सकता है। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि कंप्यूटर मॉडल बेहतर हो रहे हैं, लेकिन केवल तकनीक से समस्या का समाधान नहीं होगा। जलवायु प्रतिबद्धताओं को तुरंत लागू करने और पर्वतीय क्षेत्रों में निगरानी और अवसंरचना को सुधारने की जरूरत है। पर्वतीय क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन तेजी से हो रहा है और इसका प्रभाव न केवल स्थानीय बल्कि वैश्विक स्तर पर महसूस किया जा रहा है। बर्फ और ग्लेशियर का तेजी से पिघलना, बारिश के पैटर्न में बदलाव और पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन इसके इशारे हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए बेहतर आंकड़ों, तकनीकी सुधार और जलवायु प्रतिबद्धताओं का पालन आवश्यक है। पर्वत केवल प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यटन के लिए महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि अरबों लोगों के जल और जीवन के लिए भी उनका महत्व अति आवश्यक है। हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम इन संकटों की गंभीरता को समझें और समय रहते कदम उठाएं। पर्वत हमारी चेतावनी दे रहे हैं, हमें सुनना होगा और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ कार्रवाई करनी होगी।

प्रदेश में जल-पर्यटन का केंद्र बनेगी शिकारा सेवा -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया बड़े तालाब के बोट क्लब पर 20 नवीन शिकारा नाव सेवा का शुभारंभ

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि राजा भोज की नगरी भोपाल में लगभग एक हजार साल पहले बने बड़े तालाब में %शिकारा नाव% सेवा का शुभारंभ ऐतिहासिक अवसर है। इन नवीन 20 शिकारों के माध्यम से पर्यटकों को कश्मीर की प्रसिद्ध डल झील का आनंद, झीलों की नगरी भोपाल में ही मिल जाएगा। शिकारों में पर्यटकों के लिए खान-पान एवं आरामदायक बैठक व्यवस्था की गई है। ये शिकारे प्रदेश के जल-पर्यटन (वॉटर टूरिज्म) को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलवाएंगे। प्रदेशवासी पर्यटन सेवा का लाभ उठाने के लिए आगे आएं। एम.पी. टूरिज्म, वॉटर स्पोर्ट्स गतिविधियों को भी आगे बढ़ा रहा है। शिकारा सेवा का आनंद उठाते हुए पर्यटक स्वदेशी उत्पादों की खरीद भी कर पाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश ने वन्य जीवों के पुनर्वास में भी इतिहास रचा है। आज अंतर्राष्ट्रीय चीता दिवस पर कूनो में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुरुवार को बोट क्लब भोपाल पर %शिकारा नाव% सेवा को झंडी दिखाने के बाद यह विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, हरियाणा के विधानसभा अध्यक्ष श्री हरविंदर कल्याण, नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार, विधायक एवं अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल विशेष रूप से उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में वन्य जीव पर्यटन को लेकर आपार संभावनाएं विद्यमान हैं। नर्मदा वैली सहित प्रदेश की बड़ी-बड़ी जल परियानाओं के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित करने वाली गतिविधियां को बढ़ाया जा रहा है। राज्य सरकार पर्यटन क्षेत्र में विकास के नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। पिछले एक साल में उज्जैन आने वाले पर्यटकों की संख्या 7 करोड़ के पार पहुंच गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शिकारों को फ्लेग ऑफ करने के बाद बड़े तालाब में शिकारे की सैर का आनंद लिया और उपलब्ध सुविधाओं की सराहना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव और गणमान्य नागरिकों ने शिकारा बोट रेस्टोरेंट से चाय, पोहा, समोसे एवं फलों का जायका लिया। साथ ही फ्लोटिंग बोट मार्केट से मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश की पारम्परिक कला बाग और बटिक वस्त्रों, जैविक उत्पादों आदि की खरीदारी भी की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बोट क्लब पर मौजूद छात्र-छात्राओं के साथ सेल्फी ली और अथितियों के साथ टेलीस्कोप से सूर्य के दर्शन किए। टेलीस्कोप की बोट क्लब पर व्यवस्था वैज्ञानिक पर्यटन को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से आंचलिक विज्ञान केंद्र भोपाल द्वारा की गई थी। विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि राजधानी की इतनी बड़ी झील में शिकारा सेवा की शुरुआत बहुत आकर्षक है। इससे प्रदेश में पर्यटन के अवसर बढ़ेंगे, पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी तो स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। शिकारा सेवा के शुभारंभ कार्यक्रम में हरियाणा के विधानसभा अध्यक्ष श्री हरविंदर कल्याण भी शामिल हुए। उन्होंने कहा कि भोपाल सभी भारतवासियों के दिल के करीब है, यह शहर देशभर में अलग दर्जा हासिल किए हुए है। बड़े तालाब में शिकारे चलते

देखने का दृश्य अविस्मरणीय है। वरिष्ठ विधायक श्री हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेशवासियों को कश्मीर की डल झील जैसा अनुभव भोपाल में होगा। नेता प्रतिपक्ष श्री उमंग सिंघार ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव, डल झील के शिकारों के माध्यम से कश्मीर को मध्यप्रदेश ले आए हैं। मध्यप्रदेश टूरिज्म की यह पहल सराहनीय है। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर शिकारों का संचालन किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए सभी 20 शिकारों का निर्माण प्रदूषण रहित आधुनिक तकनीक से किया गया है। इनका निर्माण %फाइबर रीइन्फोर्स्ड पॉलीयूरिथेन% और उच्च गुणवत्ता वाली नॉन-रिएक्टिव सामग्री से हुआ है, जो जल के साथ किसी भी प्रकार की रासायनिक क्रिया नहीं करती। इससे बड़े तालाब की पारिस्थितिकी और जल की शुद्धता पूर्णत: सुरक्षित रहेगी। ये शिकारे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्था द्वारा निर्मित किए गए हैं, जिनके द्वारा निर्मित शिकारे केरल, बंगाल और असम में भी पर्यटकों द्वारा अत्यंत पसंद किए जा रहे हैं। भोपाल का बोट क्लब इन आकर्षक शिकारों के साथ पर्यटकों के स्वागत के लिए तैयार है। शिकारों पर नौकायन का आनंद लेने के साथ पर्यटक बर्ड वाचिंग, हैंडीक्रॉफ्ट प्रोडक्ट, स्थानीय व्यंजन, आर्गेनिक वेजिटेबल्स और फरूट्स आदि भी खरीद सकेंगे। इस अवसर पर संस्कृति एवं पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री दिलीप अहिरवार, महापौर भोपाल श्रीमती मालती राय, नगर निगम अध्यक्ष श्री किशन सूर्यवंशी, जिलाध्यक्ष श्री रवींद्र यति सहित अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारी और बड़ी संख्या में पर्यटन प्रेमी उपस्थित थे।

शुष्क मौसम में पौधों से गैस उत्सर्जन

तेजी से बदलते मौसम का नया रहस्य

नई दिल्ली। हाल ही में हुए एक अध्ययन ने यह दिखाया है कि सूखे के समय पौधों से निकलने वाली गैसें केवल तापमान या नमी पर निर्भर नहीं करतीं। असली कारण यह है कि मौसम कितनी तेजी से बदल रहा है। यह खोज पौधों, सूखे और वायु प्रदूषण के बीच संबंध को समझने के तरीके को पूरी तरह बदल देती है।

यह शोध इजरायल के हिब्रू विश्वविद्यालय के कृषि, खाद्य और पर्यावरण विभाग के पर्यावरण विज्ञान संस्थान के शोधकर्ताओं के द्वारा किया गया। शोध में सामने आया कि जब मौसम अचानक बदलता है, जैसे नमी में तेज वृद्धि या तापमान में अचानक गिरावट आती है तो पौधे तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं और जैविक वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (बीओवीओसी) के उत्सर्जन की दर बदल जाती है। बीओवीओसी, यानी जैविक उत्पन्न वाष्पशील कार्बनिक यौगिक, अपने आप में प्रदूषक नहीं होते, लेकिन ये ट्रोपास्फेरिक ओजोन और फाइन पार्टिकल्स के निर्माण में भाग लेते हैं। ये दोनों ही वायु गुणवत्ता और जलवायु परिवर्तन पर असर डालते हैं। पहले वैज्ञानिकों का मानना था कि पौधों से उत्सर्जन की मात्रा मुख्य रूप से तापमान या नमी के स्तर पर निर्भर करती है। लेकिन इस नए अध्ययन में, जो उत्तरी इजरायल में किया गया, पहली बार यह पता चला कि सापेक्ष नमी में बदलाव की दर ही पौधों से बीओवीओसी उत्सर्जन की सबसे सटीक पूर्वानुमान लगा सकती है। सरल शब्दों में कहें तो, यह जरूरी नहीं है कि मौसम कितना गर्म या सूखा है, बल्कि यह मायने रखता है कि यह कितनी तेजी से बदल रहा है। उदाहरण के लिए, यदि नमी में अचानक वृद्धि होती है, तो पौधे फॉर्मिक और एसिटिक एसिड जैसे पानी में घुलनशील कार्बनिक यौगिक अधिक उत्सर्जित करते हैं। साइंस ऑफ दि टोटल एनवायरमेंट पत्रिका में प्रकाशित शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि जंगल तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं। सूखा केवल मिट्टी को नहीं सुखाता, बल्कि हवा के रसायन को भी बदल देता है। शोध निष्कर्ष मौसम और वायु प्रदूषण के बीच फीडबैक को सही ढंग से समझने का एक अधिक सटीक तरीका प्रदान करते हैं, जो विशेष रूप से मध्य पूर्व जैसे शुष्क क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के तहत बहुत महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन में उच्च-आवृत्ति वाले उपकरणों का उपयोग किया गया। प्रोटॉन स्थानांतरण प्रतिक्रिया-उड़ान का समय-द्रव्यमान स्पेक्ट्रोमेट्री (पीटीआर-टीओएफ-एमएस) की मदद से पौधों के ऊपर गैस की मात्रा को मापा गया और इसे मौसम संबंधी आंकड़ों और जलवायु मॉडलों के साथ जोड़ा गया। इस तरीके से यह स्पष्ट हुआ कि मौसम में तेज बदलाव पौधों की रासायनिक प्रतिक्रिया को तुरंत प्रभावित करते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पन्ना नेशनल पार्क में 10 नई कैंटर बसों को दिखाई हरी झंडी

एक साथ 19 पर्यटक ले सकेंगे अब जंगल सफारी का आनंद

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार सुबह पन्ना नेशनल पार्क के मडला गेट से 10 नई वीविंग कैंटर बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। अब इन बसों के जरिए पर्यटक जंगल सफारी का रोमांचक अनुभव और अधिक सुविधाजनक तरीके से ले सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में प्रदेश में पर्यटन की सुविधाओं में लगातार विस्तार किया जा रहा हैं।

मध्यप्रदेश पर्यटन विकास निगम ने पर्यटकों को एक और सौगात देते हुए प्रदेश के विभिन्न राष्ट्रीय उद्यानों में पर्यटन सुविधाओं के विस्तार की दिशा में अहम कदम उठाया है। जंगल सफारी के लिए 10 नई आरामदायक वीविंग कैंटर बसें उपलब्ध करायी हैं। इन कैंटर बसों में एक साथ 19 पर्यटकों के बैठने की क्षमता है। यह बसें अन्य सफारी वाहनों की तुलना में अधिक लंबी और ऊंची हैं, जिससे पर्यटकों को बेहतर दृश्य और अधिक आरामदायक यात्रा का अनुभव मिलेगा। बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए ये बसें अधिक सुरक्षित मानी जा रही हैं। इन बसों की लंबाई और ऊंचाई भी अधिक है, जिससे सफर के दौरान पर्यटकों को ज्यादा जगह और आराम मिलता है। वहीं बच्चों और सीनियर सिटिज़न्स के लिए यह बसें सुरक्षित और अनूठा अनुभव प्रदान करेंगी। इन बसों में बैठकर पर्यटक न केवल वन्यजीवों के विचरण का नज़ारा देख सकेंगे, बल्कि जंगल सफारी का एक सुखद और यादगार अनुभव भी कर सकेंगे। 10 नई वीविंग कैंटर बसों के संचालन से उन पर्यटकों को बड़ी सुविधा मिलेगी। ऑनलाइन बुकिंग न होने पर भी जंगल सफारी के आनंद और अनुभव से वंचित नहीं होंगे। ऑनलाइन स्लॉट जल्दी भर जाने से पर्यटकों को नेशनल पार्क पहुंचकर भी सफारी से वंचित होने जैसी असुविधा अब नहीं होगी। नई कैंटर बसों के संचालन के बाद अब पर्यटकों को नेशनल पार्क के गेट पर ही सफारी बुक करने की सुविधा मिलेगी। ऑनलाइन बुकिंग पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। इन वाहनों से जंगल सफारी का आनंद लेने के लिए प्रति व्यक्ति/प्रति राउंड लगभग 1150 से 1450 रुपए तक शुल्क देना होगा। ये 10 नई कैंटर बसें प्रदेश के प्रमुख नेशनल पार्कों और पर्यटन स्थलों जैसे बांधवगढ़, कान्हा, पेंच, पन्ना, परसिली (सीधी) सहित अन्य नेशनल पार्क्स और अन्य पर्यटन स्थलों में पर्यटकों की सुविधा के लिए संचालित की जाएंगी।

बुंदेलखंड धरा है हीरों और महावीरों की -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

बहनों के आशीर्वाद से राज्य सरकार निरंतर कर रही है विकास कार्य

एक करोड़ 26 लाख से अधिक लाड़ली बहनों को 1857 करोड़ रुपए अंतरित

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना की हितग्राहियों के खातों में सिंगल क्लिक से ट्रांसफर की 31वीं किस्त

मुख्यमंत्री ने राजनगर में 510 करोड़ लागत के 29 विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन और लोकार्पण

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बुंदेलखंड हीरों और महावीरों की धरती है। यह मंदिरों की नगरी है। उन्होंने कहा कि महाराज छत्रसाल के कार्य काल में बुंदेलखंड की महाविजय होती थी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने महाराजा छत्रसाल के शौर्य को नमन किया। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि बुंदेलखंड के गौरव महाराज छत्रसाल की प्रतिमा और सरदार वल्लभ भाई पटेल की प्रतिमा का खजुराहो में अनावरण किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव छतरपुर के राजनगर में लाड़ली बहना सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज प्रदेश की 1.26 करोड़ से अधिक लाड़ली बहनों को 1857 करोड़ रुपए राशि अंतरित की गई है। इनमें छतरपुर की 3 लाख 24 हजार से अधिक लाड़ली बहनें शामिल हैं। हितग्राहियों बहनों को उनके बैंक खातों में 31वीं किस्त के रूप में 1500 रुपए की सौगात मिली है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में अब तक 46 हजार 500 करोड़ की राशि बहनों के खातों में अंतरित की जा चुकी है। बहनें अपने परिवार के संचालन में भी सहयोग कर रही हैं। बहनों के आशीर्वाद से राज्य सरकार निरंतर विकास कार्यों को आगे बढ़ा रही है। प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से बहनों को पक्के मकान और उज्जवला गैस कनेक्शन भी दिए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुंदेलखंड के चहुँमुखी विकास के लिए 270 करोड़ लागत के 9 विकास

कार्यों का भूमि-पूजन और 240 करोड़ लागत के 20 विकास कार्यों का लोकार्पण किया। इनमें 2 सांदीपनि विद्यालय और स्वास्थ्य संस्थान शामिल हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि खजुराहो में बड़ा कन्वेंशन सेंटर और फाइव स्टार होटल बनाया जाएगा। राजनगर में राजगढ़ पैलेस की सौगत मिल रही है। इससे पर्यटन क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी। बुंदेलखंड के दमोह, छतरपुर, पन्ना और कटनी में 4 मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जायेंगे। केन-बेतवा लिंक परियोजना से क्षेत्र के किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि 2 नेशनल हाइवे को जोड़ने वाले फोर लाइन सड़क की सौगात दमोह-सागर को मिलने जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सागर में नया इंडस्ट्रियल पार्क विकसित किया जाएगा। इससे 30 हजार से अधिक लोगों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राजनगर में आयोजित लाड़ली बहना सम्मेलन में विभिन्न योजनाओं के हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण भी किया। खजुराहो सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुंदेलखंड के चहुंमुखी विकास में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। राज्य सरकार जो कहती है करके दिखाती है। सरकार ने लाड़ली बहनों के खातों में प्रतिमाह 3000 रुपए भेजने का संकल्प लिया था, जिसे धीरे-धीरे पूरा करने की ओर आगे बढ़ रहे हैं। राजनगर विधायक श्री अरविंद पटेरिया ने कहा कि बुंदेलखंड में डेस्टिनेशन कैबिनेट कर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अनुपम सौगात दी है। पिछले 2 वर्षों में खजुराहो में विकास से संबंधित महत्वपूर्ण कार्य हुए हैं। आज सूखे और पिछड़े बुंदेलखंड को विकास की नई पहचान मिल रही है। सम्मेलन में पंचायत एवं ग्रामीण विकास, श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल, वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री दिलीप अहिरवार, विधायक छतरपुर श्रीमती ललिता यादव, विधायक श्री कामाख्या प्रताप सिंह, विधायक श्री राजेश शुक्ला, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती विद्या अग्निहोत्री सहित अन्य जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008